

## निर्मलवर्मा का 'वे दिन' उपन्यास की भाषा शैली

डॉ.ए.सी.वी.रामकुमार

पूर्वसहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय, तमिलनाडु, भारत।

### ARTICLE DETAILS

#### Article History

Published Online: 15 April 2019

#### Keywords

भाषाशैली, दृश्यात्मक भाषा, शिल्पविधान, चेक भाषा का प्रयोग, अंग्रेजी शब्दों का चयन, अरबी फारसी शब्दों का प्रभाव, वे दिन उपन्यास, साहित्यकार निर्मलवर्मा आदि।

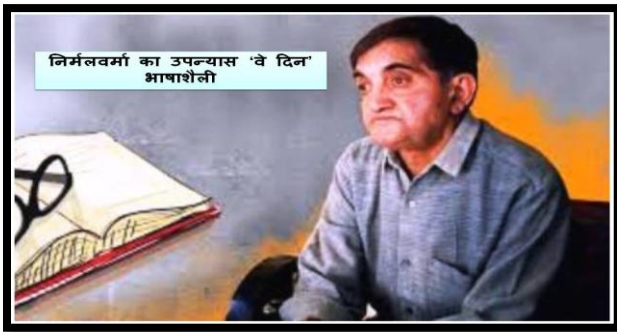
#### Corresponding Author

Email: nanduram2006[at]gmail.com

### ABSTRACT

भावों और विचारों की सफलता और सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति की सर्वाधिक सशक्त तथा व्यावहारिक माध्यम भाषा है। किसी कृति का जिस प्रकार वस्तुपक्ष को लेकर अध्ययन किया जाता है, उसी प्रकार उस कृति के सम्यक अध्ययन के लिए उसकी भाषाशैली पक्ष को भी देखना आवश्यक हो जाता है। निर्मल वर्मा आधुनिक उपन्यासकार हैं, अर्थात् उनका उपन्यास 'वे दिन' में विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दों, उक्तियों, कहावतें, मुहावरे, विशिष्ट वाक्यों का प्रयोग देखने को मिलता है। जिसका वर्णन निर्मल वर्मा ने अपने 'वे दिन' उपन्यास में गंभीरता से प्रस्तुत की।

### 'वे दिन' उपन्यास की भाषा शैली



निर्मलवर्मा की भाषा सहज , सीधी और शक्तिशाली है। निर्मलवर्मा ने हिन्दी को एक नई कथा की भाषा दी है। उनकी भाषा की ऐंद्रियता , सूक्ष्म से सूक्ष्म बखान भी कविता की तरह बिबों या स्मृति चित्रों से करने की उनकी क्षमता हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। निर्मलवर्मा अपनी भाषा में कलाकारी सलवटें डालने के लिए दो पद्धतियों का प्रयोग करते हैं , एक कविता पूर्ण भाषा , दूसरी अंग्रेजी के विशिष्ट प्रयोगों का स्वीकार। कवितापूर्ण भाषा में उपमा भी है और विशेषण भी। 'वे दिन' में इस तरह के उदाहरण अनेक हैं।

1. आतुर प्रतीक्षा।
2. सफेद स्वप्निल रुई के गोलों सी बँदें।
3. अदृश्य गंध।
4. नीरव आलोक, म्लान ठंडापन
5. पलकों की धूमिल छाया
6. झुटपटी सी मुस्कराहट
7. सफेद सागर, नीला द्वीप
8. आवारा आतंक, विस्पंद आलोक

9. नींद के अंतिम सिरे से लटकी पहली स्मृति

10. भीगा-भीगा उजला मन

11. नीरव आलोक, निर्वाक सा सम्मोहन, स्तब्ध कोलाहल

12. स्तब्ध ठिठकी धूमिल छायाएँ

13. नशीली झुरझुरी आदि

आधुनिक बिंब और प्रतीकों का सांकेतिक प्रयोग भी इस बुनावट का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। यद्यपि उनके प्रतीक-चयन में रूमानियों का मोह स्पष्ट परिलक्षित है। मकबरे , गाथिक चर्च , उड़ते कबूतर , सीगल्स , गिरजे की घंटियाँ , क्रिसमस कार्डस , ट्राफिक लाइट्स , भुतैले मकान , यहूदियों का सिनेगाग , पुल टवर , मीडोज , बर्फ , धूप आदि शब्द आधुनिकता का संकेत देते हैं।

अनेक स्थानों पर पात्रों के कथोपकथन में वाचक ने प्रत्येक कथन के साथ मैंने कहा , उसने कहा , टी०टी० ने कहा जैसे वार्तालाप देने की प्रणाली प्रस्तुत किया। इसके साथ-साथ दृश्यात्मक भाषा शैली , शिल्प , चेक भाषा का प्रयोग अंग्रेजी और फारसी शब्दों का प्रयोग करके अपनी शब्दावली में प्रभाव दिखाया।

#### दृश्यात्मक भाषा :

उनकी भाषा का पहला महत्वपूर्ण गुण उसकी मूर्तता ही है। व्यक्ति का एकांत भी इससे छिपता नहीं। दृश्य और प्रत्यक्ष करता है। इस दृश्य भाषा के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं;

1. लो सरकने लगी..... एक चमकते कीड़े की तरह.....
2. सड़क सफेद भी - अंधेरे परे-सी चमकती हुई।
3. रात और दिन के बीच चिधड़े सी झेलती हुई स्मृति

4. कमरे का अंधेरा एक मैले-चिथड़े-सा मेरी आँखों के सामने फड़फड़ाने लगा
5. मुझे लगा जैसे उस शाम जो चाह आई वह अब एक मोमबत्ती की तरह मेरे भीतर काँप रही थी।

#### शिल्पविधान :

श्रीमती रायना प्राग के छत्रावास में 'मैं' के साथ कुछ आनंददायक दिनों को बिताकर स्वदेश लौट गई है। मैं अपने कमरे में अकेलेपन की व्यथा को झेलता हुआ रायना के साथ बिताये जीवन को दुबारा जीता है। स्मृति के प्रकाश में वह अपने अतीत को देखता है। पूरा उपन्यास फ्लैशबैक शिल्प में लिखा गया है। मैं स्वयं अपनी कमनी कहता है। अतः इस आत्मकथात्मक शैली में लिखे उपन्यास से लेखक को अदृश्य ही रहना चाहिए। लेकिन न जहाँ-कहीं अनुभव की सूत्र रूप में सूचना देनी होती है , लेखक पाठक को सम्बंधित जैसा दिखाता है। - "तुम कुछ ऐसे लोगों को कुछ शहरों से जोड़ लेते हो। तुम आखिर तक निर्णय नहीं कर सकते कि किसी एक को अलग करने से दूसरा खाली हो जाएगा।<sup>1</sup> यहाँ तुम पाठक के लिए ही आया है।

विभिन्न प्रकार की शराबों और शराबघरों का आवश्यकता से अधिक वर्णन है। कौन-सी शराब कब पीनी चाहिए और पीने के बाद कैसा लगता है, आदि सूचनाएँ कालात्मक संयम के अभाव के सूचक हैं। पवन-प्रवाह, नदी का स्वर, बर्फ का गिरना, होटलों की चहल-पहल, वाद्य-नृत्य, दुकानों पर क्रिसमस खेल आदि के वर्णन से प्राग पाठक के मन की आँखों के पास आ जाता है। आकांक्षा , भय, उल्लास, प्रेम और काम-वासना का उदय आदि के काव्यमय वर्णन से पाठक पात्रों के हृदय की धड़कन को सुन सकता है। उज्वल भूरे बाल , भूरी उत्सुक आँखें , अरुण अधर , बेचैन अँगुलियाँ, चेहरे पर सिमट आने वाली मलिन छाया, मुसकान, देह की गंध आदि के वर्णन से पात्रों के रूप-आकार और मनःस्थिति का आभास मिलता है। इस प्रकार शिल्प-विधान की दृष्टि से यह उपन्यास आज के उपन्यासों से भिन्न-सा लगता है।

#### शैली :

'वे दिन' उपन्यास की वस्तुनिष्ठ व्याख्या ही शैली है। इस उपन्यास में प्रतीक , बिंब, अर्थ और अभिव्यक्ति के माध्यम से निर्मल वर्मा ने एक नई शैली का प्रयोग किया है। इस प्रकार की शैली शायद अन्य उपन्यासों में बहुत कम दिखाई देता है। इसकी शैली आधुनिकता का परिचायक है। इस उपन्यास में कविता का स्वर, चित्रकला और संगीतकला की नई शैली देखने को मिलती है। 'वे दिन' में काव्यात्मक अंश इसकी आंतरिक संगीत को तोड़ने के बजाय इसे जोड़ते हैं। साहित्यिक भाषा या काव्य भाषा के रूप में विशिष्ट भाषा का प्रयोग करके निर्मल वर्मा जी अपनी शैली में 'वे दिन' उपन्यास को व्यक्त किया। कभी-कभी उपन्यास पढ़ते वक्त ऐसा लगता है जैसे लेखक ने ऊपरी सतह पर फैली हुई चीजों को

भावुकतावश मंझी हुई शैली में सामने रख दिया हो। चयन , विचलन, समानान्तरता और अप्रस्तुत-विधान का प्रयोग करके उपन्यास बुनावट में आधुनिकता-बोध व्यक्त किया। इस प्रकार निर्मल वर्मा जी अपनी शब्द-शैली के कारण 'वे दिन' उपन्यास को प्रभावपूर्ण बना दिया।

#### चेक भाषा का प्रयोग :

इस उपन्यास में निर्मल वर्मा जी कहीं-कहीं ऐसी शब्दावली का प्रयोग किया, इसके अनुवाद के साथ उपन्यास में व्यक्त किया। उपन्यास में एक जगह पर चेक भाषा का प्रयोग किया। इसका विवरण इस प्रकार है :

"क्या आप चैडोक (टूरिस्टब्यूरो) से आए हैं<sup>2</sup>

"आप विदेशी हैं?"

ताके वाशे जेना?(आपकी स्त्री भी)

वह आस्ट्रियन है मैंने कहा

बेल्मी हैस्का (वह बहुत सुंदर है)

नेनी मोय जना। (वह मेरी स्त्री नहीं है)

ये स्तेने हैस्का (उससे कोई अंतर नहीं पड़ता - वह बहुत सुंदर है)

बिने तान्विते? (तुम नाचोगी नहीं)<sup>3</sup>

इस प्रकार उपन्यास में कहीं-कहीं चेक भाषा का प्रयोग करके उपन्यास में एक नया प्रभाव पैदा कर दिया। इससे निर्मल वर्मा का भाषिक प्रेम स्पष्ट हो रहा था।

#### अंग्रेजी शब्दों का चयन :

उपन्यास में निर्मल वर्मा की मैं और रायना के बीच जो बातचीत है, अंग्रेजी होने पर भी हिन्दी के अक्षरों के माध्यम से व्यक्त किया लेकिन ज्यादातर अंग्रेजी शब्दों को प्रयोग करके पाठकों को आकर्षित किया। उपन्यास में कितने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ उसका पूरा विवरण इस प्रकार है - कारीडोर , टेलीफोन, होस्टल, रिसीवर, हण्डिल, ब्रश, डाइनिंग हाल, टूरिस्ट एजेन्सी, फ्राइंग पेन, स्टोव, ड्रफ्लर, कोट, बीयर, मफलर, बेसिन, स्टिल लाइफ, टैक्सी सटैंड, कार, फुट-पाथ, ड्राइवर, पार्क, वोदका, कैबिन, टाइपराइटर, टाइपिस्ट, पेपरवेइट, लाइटर, पैकेट, अन्टरप्रिट, आस्ट्रियन, स्कालरशिप, शो-विन्डो, गेट-कीपर, फैकल्टी, प्रिसिपल, मनी-आईर, विंटर, किचन, वीसा, अपार्टमेंट, लिफ्ट, सस्पेंस, बेबुल-लैम्प, सिंक-स्पोर्ट्स, टाइटिल, कन्वरसेशन, यूनिवर्सिटी, काफी, ट्राफिक, शाप-गर्ड, थियेटर, मशीन, फिलासिफकल, स्टूडियो, आइडिया, डायरक्टर, बल्ब, आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया। इसके साथ-साथ कभी-कभी अंग्रेजी में व्याख्यान भी हो रहा है।

यथा -

1. "रुम नं० 13.... यू हेव टेलीफोन"<sup>4</sup>

2. टैक्सी ले लीजिए - वी शैल पे आफ इट<sup>6</sup>
3. सो इट ईज फि क्सड<sup>6</sup>
4. दे आर द ओन्ली स्पोर्ट-ईडियट्स इन दिस वर्ल्ड<sup>6</sup>
5. दिस ईस प्राण - दि मदर आफ सिटी<sup>8</sup>
6. दि गोल्डन सिटी - द सिटी आफ इण्ड्रेड टवर्स..  
दि सिटी आफ टियर्स एण्ड नाइटमेर्स<sup>9</sup>
7. ऐलिसन, इ यू हेव कैमेरा बाई एनी चान्स<sup>10</sup>
8. यू ड्रंग बुद्धिस्ट..... यू मैड मैण्डारिन<sup>11</sup>
9. इट इज लाइक ड्रीम-लैण्ड<sup>12</sup>
10. यू थिंक आई एम ए कैड टु लीव हर<sup>13</sup>

इतना ही नहीं 'वे दिन' पृ० ७२, ७८, ८२, ९४, १००, १०८, १३४, १४०, १४३, १४९, १७०, १२, १३, १७७, १७९, १६१, १६३, १७१, १७८, १७९, आदि जगह पर अंग्रेजी व्याख्यान दिया गया है। इससे मालूम हो रहा है कि इस उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का प्रभाव विशिष्ट रूप से पड़ा है।

#### अरबी फारसी और अन्य शब्दों का प्रभाव :

अंग्रेजी के साथ-साथ फारसी और अन्य भाषाओं के शब्द निर्मलवर्मा ने वे दिन उपन्यास में प्रयोग किया। उसका विवरण संक्षिप्त रूप से इस प्रकार है - मोजे , दरवाजे, सिर्फ, अखबार, आवाज, बर्फ सफेद, खामोश, मंजिल, आखिर, कागज, लिफाफा, जुवान, गुजार, ईजेरा, खुद-ब-खुद, खयाल, खाली, पुरजा आदि शब्दों का प्रयोग किया।

#### निष्कर्ष :

सारांश में कह सकते हैं कि निर्मलवर्मा की रचनाओं की मुख्य प्रवृत्ति रुमानी की है , यद्यपि उसे उन्होंने पश्चिमी जीवन से

अभिव्यक्त करके आधुनिक बनाने का प्रयत्न किया है। उनकी उपन्यास वे दिन की कलात्मक बुनावट , मनःस्थितियों को व्यक्त करने की शक्ति तथा भाषा और अभिव्यक्ति का सामर्थ्य उन्हें एक महत्वपूर्ण नये लेखक की भूमिका में खड़ा करना है। इस उपन्यास में घटना-वर्णन , चरित्र-चित्रण, शिल्प-विधान आदि के परम्परागत ढाँचे को तोड़ने का प्रयत्न दिखायी पड़ता है। इस में वर्णन कम, संकेत ज्यादा है। रायना के मनोभावों और चेहरे का चित्रमयी भाषा में अंकन लेखन की सजग , सतर्क एवं संवेदनशील दृष्टि तथा भाषा-क्षमता का परिचायक है। दिसम्बर मास में पड़नेवाली सूरज की किरणों तथा रात में बिजली की रोशनी का लेखक ने काव्यमयी भाषा में चित्रण किया है। इतना ही नहीं , विशेषणों के द्वारा उनके गत्यात्मक सौंदर्य का आभास दिया गया है - यथा..... भीगा-सा उजलापन, नीरव आलोक, फीका म्लान आलोक, सूखी धूप , साँवली छाँह , बासी-सा अँधेरा , दुबकी छायाएँ, बत्तियाँ, इबडबाई-सी आदि तरह-तरह की शराबों और खाने की चीजों की गन्ध का वर्णन लेखक की गन्य संबंधी सजग संवेदना का सूचक है। शीत-कटिबंध में स्थित प्राण के शीतल पवन का स्पर्श तथा रायना के हाथों आदि के स्पर्श का वर्णन संवेदना का परिचायक है। गिरिजाघर की गूज , टेलीफोन की घण्टी, ट्राम की खडखडाहट, रायना की गुनगुनाहट पदचाप , हृदय की धड़कन , पवन की सरसराहट, जल प्रवाह का कल-कल आदि अनेक ध्वनियों का चित्रण लेखक की ध्वनि-सम्बंधी संवेदनशीलता का द्योतक है। इस प्रकार रूप , रस, गन्ध, ध्वनि स्पर्श आदि के अनेक रूपों का काव्यमय वर्णन इस कलाकृति को एक विशेष महत्व प्रदान करते हैं। वे दिन के वार्तालाप भी पात्रों की वैयक्तिक विशेषताओं और उनके उन्मुक्त जीवन के परिचायक है। इस वार्तालापों में भी नवीनता है। स्त्री-पुरुष के एकान्तिक मिलन का भी वर्णन लेखक ने अत्याधिक सांकेतिक और संवेदनशील भाषा में अभिव्यक्त किया।

#### संदर्भ सूची :

- |                                   |                                   |
|-----------------------------------|-----------------------------------|
| 1) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 75  | 8) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 25  |
| 2) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 30  | 9) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 25  |
| 3) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 148 | 10) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 27 |
| 4) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 9   | 11) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 51 |
| 5) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 10  | 12) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 62 |
| 6) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 16  | 13) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 74 |
| 7) निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ० 25  |                                   |